ॐ ओ३म ॐ

सन्त परमानन्द ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन

(स्थापित १९३३ ई०)

रिपोर्ट १९५६ से १९५७ तक

इस रिपोर्ट में हम अन्धे और दृष्टिहीन भारतीयों के नेत्र सुधार सम्बन्धी संघ के उत्कृष्ट प्रयत्नों एवं चिकित्सा कार्यों का संक्षिप्त विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। महात्मा गांधी एवं पं० जवाहरलाल नेहरू (वर्तमान प्रधान-मन्त्री भारत शासन) आदि नेताओं ने संघ के कार्य की प्रशंसा की है।

नेत्रहीनों को प्रकाश दो !

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन

(सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ सन् १८६० ई० के अनुसार रजिस्टर्ड है।)

१८, अलिपुर मार्ग दिल्ली-८

❀ दान-सूची ❀

२०,०००	सेन्ट्रल गवर्मेन्ट।
१७,०००	समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली स्टेट।
१२,०००	चीफ कमिश्नर, दिल्ली।
७,०००	गान्धी स्मारक निधि।
५,०००	समाज कल्याण बोर्ड, (बिहार)
५,०००	" " " (बिन्ध प्रदेश)
५,०००	श्रीमती यशवति देवी धर्मपत्नी प्रोफेसर मनोहर लाल खड्ग वासला।
३,०००	दिल्ली म्युनिस्पल कमेटी, दिल्ली।
३,०००	समाज कल्याण बोर्ड, (राजस्थान)
२,८००	अखिल भारतीय आर्य हिन्दू धर्म सेवा संघ, (दिल्ली)
२,०३३	इन्डियन रेड क्रौस सोसायटी (औषधि)।
२,०००	महाराजा रीवां, (विन्ध प्रदेश)
२,०००	बिहार सरकार।
१,०००	नोटीफाईड एरिया कमेटी (दिल्ली)
७,२०	सेठ गंगाधर नथमल माउगंज पटना सिटी (बिहार)
३,६५	देहली म्युजिक सोसाइटी।
३,२८	हस्तेरामपत जी मुनीम दिल्ली क्लाथ मिल्स।
२,१०	ला० घनश्यामदास जी खंडेलवाल करौलबाग (दिल्ली)
२,०१	सेठ सीताराम जी अग्रवाल फारबिषगंज जि० पुर्णियां (बिहार)
२,००	श्री खुशीराम जी रिटायर्ड प्लीडर विजयनगर (दिल्ली)
१,१०	पटवारी जी की दुकान करोल बाग (दिल्ली)

———

ब्रह्मीभूत श्री १

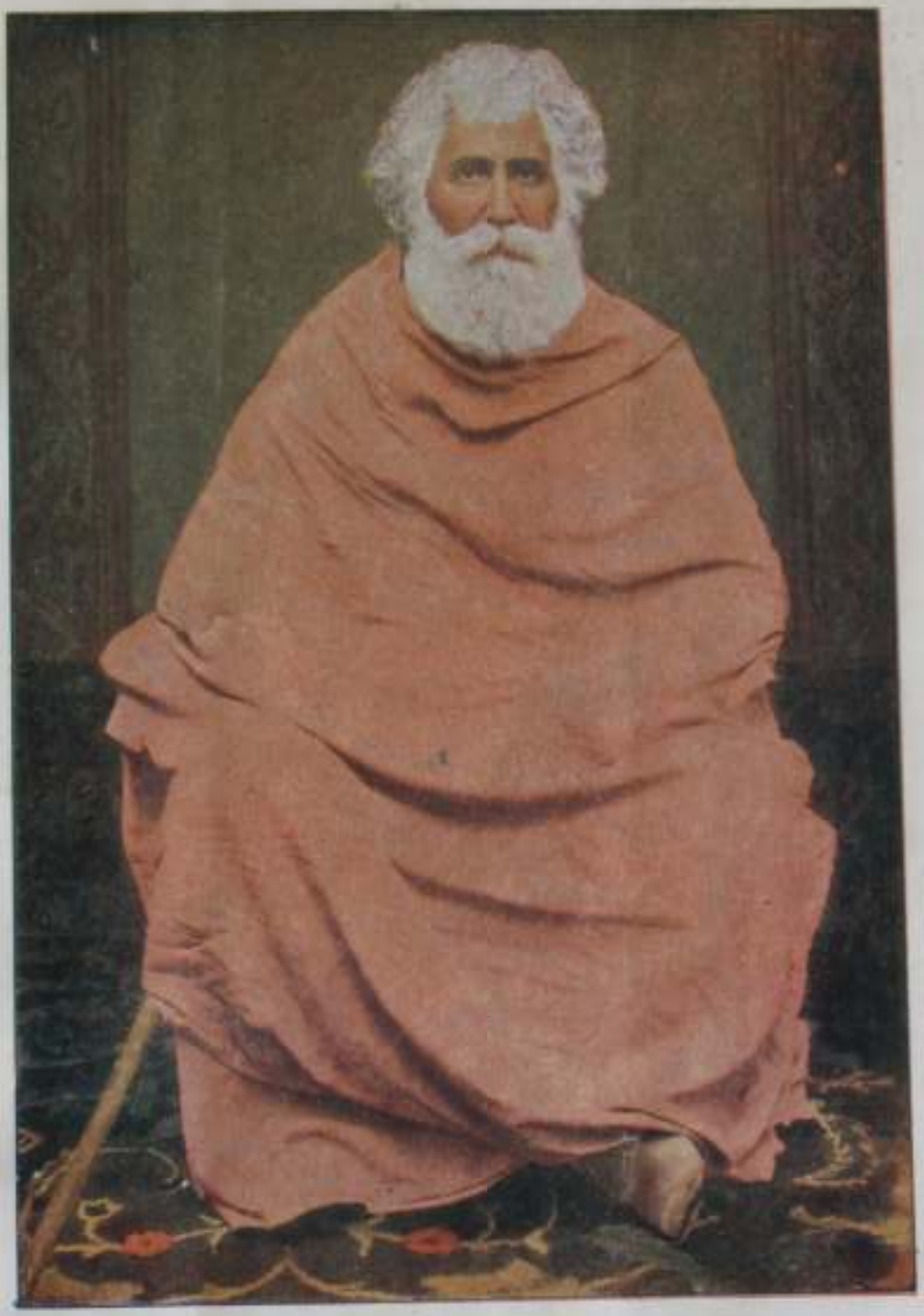

ब्रह्मीभूत श्री १०८ परमहंस श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज

सन्त परमानन्द

(Sant Parma

संघ का प्रथ

स

(क) नेत्र अस्पताल खो
अस्पताल खोलना
अन्धता व नेत्र रोगों

(ख) ठीक समय पर उप
के अन्य उपायों त
और नेत्र रोगों को
रोगियों को बचाना

(ग) नेत्र चिकित्सा की
दर्जे की शिक्षा देना

(घ) प्रत्येक सम्भव उपाय

(ङ) ऊपर लिखे उद्देश्यों

(च) नेत्र रोग तथा दूसरे
तैयार करना, प्रचार

वर्तमान

१. श्री सेठ जुगलकिशोर
नई दि

२. श्री एस० के० माल,

३. रायबहादुर गयाप्रसा
नई दि

❀ ओ३म् ❀

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन

(Sant Parmanand Blind Relief Mission)

संघ का प्रधान कार्यालय दिल्ली में है।

संघ के उद्देश्य

(क) नेत्र अस्पताल खोलना, नेत्र वार्ड खोलना, चलते फिरते अस्पताल खोलना और चक्षुदान यज्ञों की आयोजना करके अन्धता व नेत्र रोगों का निवारण करना।

(ख) ठीक समय पर उपयुक्त तथा प्राथमिक चिकित्सा द्वारा, रोक थाम के अन्य उपायों तथा साहित्य एवं व्याख्यानों द्वारा, अन्धापन और नेत्र रोगों को रोकना और शास्त्र विरुद्ध चिकित्सा से रोगियों को बचाना।

(ग) नेत्र चिकित्सा की डाक्टर, विद्यार्थी, नर्स, ड्रैसर्स आदि को उत्तम दर्जे की शिक्षा देना।

(घ) प्रत्येक सम्भव उपाय द्वारा अन्धों की सहायता करना।

(ङ) ऊपर लिखे उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सब आवश्यक कार्य करना।

(च) नेत्र रोग तथा दूसरे रोगों की अनुभूत औषधियों की खोज करना, तैयार करना, प्रचार करना तथा वितरण करना।

वर्तमान कार्यकारिणी समिति

१. श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिरला, ५ अल्बुकर्क रोड नई दिल्ली। — अध्यक्ष

२. श्री एस० के० मालू, ८१ दरियागंज, दिल्ली। — उपाध्यक्ष

३. रायबहादुर गयाप्रसाद, २४ फायर ब्रिगेड लेन नई दिल्ली। — अवैतनिक प्रधानमंत्री

४. श्री जे० एन० सिंघल, ६ बैरन रोड
नई दिल्ली। अवैतनिक संयुक्त मंत्री

५. श्री मूलचन्द जी बगड़िया, सेक्रेटरी बिरला मिल्स,
सब्जीमण्डी, दिल्ली। कोषाध्यक्ष

६. श्री भक्त नन्दकिशोर जी मोरपंखवाले,
द्वारा जगतराम मिलखीराम, भटिंडा। सदस्य

७. जस्टिस चन्द्रभान जी अग्रवाल, जज हाईकोर्ट, इलाहाबाद ,,

८. ला० हंसराज गुप्ता, २० बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली। ,,

९. श्री सूर्यनारायण कोतवाल वाले, ११ बाजार लेन,
बाबर रोड, नई दिल्ली। ,,

१०. श्री हरप्रसाद जी, कोठी मनीराम रामचन्द्रमल, नौघरा,
किनारी बाजार, दिल्ली। ,,

११. रायबहादुर नारायणदास, रिटायर्ड इन्जीनियर,
२१ पूसारोड, नई दिल्ली। ,,

१२. सरदारबहादुर बहादुरसिंह कन्ट्रैक्टर,
१ हनुमान रोड, नई दिल्ली। ,,

१३. श्री जनार्दन भट्ट एम० ए०, बिरला लाइन्स,
सब्जी मण्डी, दिल्ली। ,,

१४. श्री चण्डीप्रसाद जी वैद्य, बिरला मन्दिर, नई दिल्ली। ,,

१५. श्रीमती कुमारी सूरजदेवी भगवत-भक्ति आश्रम, रेवाड़ी। ,,

१६. ,, कमलादेवी द्वारा जगतराम मिलखीराम, भटिंडा। ,,

१७. श्री रामपतजी, दिल्ली क्लौथ मिल्स वाले,
सब्जी मण्डी, दिल्ली। ,,

१८. श्री रामकृष्णदास जी रंगवाले, १६ बाराखम्बा रोड,
नई दिल्ली। ,,

१९. श्री बी० डी० जोशी, ६५ सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट,
कलकत्ता। ,,

२०. श्री मदनलाल जी सोढानी, ६ बेलारोड दिल्ली। ,,

२१. श्री जगन्नाथ जी, ७४ टोडरमल रोड, नई दिल्ली। ,,

श्रीमती इन्दिरा गांधी जी संस्था के अस्पताल का कार्य विवरण अवलोकन करते हुए

श्रीमती इन्दिरा गांधी जी संस्था के अस्पताल का कार्य विवरण अवलोकन करते हुए

श्री गुरमुखनिहालसिंह चीफ़ मिनिस्टर, डा० चड्ढा डाइरैक्टर हैल्थ सर्विसेज़ देहली स्टेट
तथा संस्था के कार्यकर्ता

हमारे देश की अभि
के कारण, साधारण रो
असामयिक मृत्यु का ि
करती है। जिसमें केव
करोड़ है। इनमें प्रायः
उपचार किया जाय तो
की परम सफलता है।

हमारी सरकार ज
लिये इस ओर भी जाग
के साथ जनता की रो
सरकार के पास अभी
आवश्यकतानुसार स्थान

निर्धन तथा अशि
के अधिक खर्च को स
हकीमों के चक्कर में प
पड़ती है। अतः जब
साधन अथवा सर्व शि
मुक्त नहीं कर सकती त
संस्था द्वारा जनता को
प्रयत्नशील रहना चाहि
गैर सरकारी स्थायी
पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी

सं

श्री १०८ स्वामी प
कारी महात्मा थे, ये
करके वहां प्रभु भक्ति क

प्रस्तावना

हमारे देश की अधिकांश जनता अपनी निर्धनता तथा अनभिज्ञता के कारण, साधारण रोगों का भी समयोचित उपचार न हो सकने से असामयिक मृत्यु का शिकार हो जाती है, या रुग्ण जीवन व्यतीत करती है। जिसमें केवल नेत्र रोगियों की ही संख्या अनुमानतः एक करोड़ है। इनमें प्रायः पचास लाख रोगी ऐसे हैं,यदि उनका समयोचित उपचार किया जाय तो वे दृष्टिलाभ कर सकते है जो कि मनुष्य जीवन की परम सफलता है।

हमारी सरकार जनता के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने के लिये इस ओर भी जागरूक है। क्योंकि अन्य विकास कार्यों तथा उन्नति के साथ जनता की रोग मुक्ति का उत्तरदायित्व भी सरकार पर ही है। सरकार के पास अभी थोड़े ही नेत्र चिकित्सालय हैं और उनमें भी आवश्यकतानुसार स्थान की कमी है।

निर्धन तथा अशिक्षित ग्रामीण जनता को, गैर सरकारी डाक्टरों के अधिक खर्च को सहन न कर सकने के कारण, साधारणतः नीम हकीमों के चक्कर में पड़कर लाभ के स्थान पर प्रायः हानि ही उठानी पड़ती है। अतः जब तक सरकार नेत्र रोग निवारणार्थ किसी सफल साधन अथवा सर्व शक्ति सम्पन्न योजना द्वारा इस रोग से जनता को मुक्त नहीं कर सकती तब तक निःस्वार्थ परोपकारी व्यक्ति, या संगठित सस्था द्वारा जनता को व्यर्थ व्यय व कठिनाइयों से बचाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये, इस विशाल गैर सरकारी स्थायी नेत्र चिकित्सालय की स्थापना करने वाले थे पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज।

संस्था की स्थापना

श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज एक उच्चकोटि के परोपकारी महात्मा थे, ये रेवाड़ी में श्री भगवद्भक्ति आश्रम की स्थापना करके वहां प्रभु भक्ति का उपदेश दिया करते थे। अकस्मात स्वामी जी

की आंख में कांटा लगने के कारण मोतियाबिन्द हो गया। श्री स्वामी जी के शिष्यों ने नेत्र ओपरेशन के लिये मोगामण्डी निवासी सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ रायबहादुर डा० मथुरादास जी पहवा को उक्त आश्रम पर बुलाया। डाक्टर जी ने स्वामी जी की आंख का औप्रेशन किया किन्तु उन्हें आराम नहीं आया। पुनः स्वामी जी ने भक्त नन्दकिशोर जी मोरपंख वाले को मोगामण्डी डाक्टर मथुरादास जी पहवा को बुलाने भेजा, डा० साहब को समय न मिल सका, उन्होंने डा० वजीर चन्द जी को भेजने के लिए कहा, वहीं बैठकर भक्त जी ने भगवान की प्रार्थना की कि हमारे गुरू महाराज की आंख में आराम आयेगा तो मैं हजारों ग़रीब नेत्र रोगियों की आंखें बनवाऊंगा, जब डा० वजीरचन्द जी को लेकर भक्त जी रेवाड़ी आश्रम पहुँचे तो महाराज की आंख बिलकुल ठीक थी।

अपने निश्चय के अनुसार ही भक्त जी ने महाराज की आज्ञा लेकर १६३३ में पहला चक्षु दान यज्ञ रेवाड़ी आश्रम में किया।

सन् १६३४ में श्री स्वामी जी महाराज ने इस कार्य को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए एक नियमित संस्था का रूप दे दिया। दुर्भाग्य-वश सन १६३७ में पूज्यपाद श्री स्वामी जी परमधाम सिधार गये। श्री स्वामी जी महाराज के अनन्य भक्त श्री नन्दकिशोर जी मोरपंख वाले इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने में प्रयत्नशील रहे।

सन् १६४० तक संस्था रेवाड़ी आश्रम द्वारा ही कार्य करती रही, मगर जितनी प्रगति करने का उद्देश्य था, उतनी देहात में रहने के कारण न हो सकी। इस बात को सम्मुख रखते हुये सन् १६४१ में संस्था को करौलबाग दिल्ली में लाया गया और उस समय से संस्था का कार्य निरन्तर बढ़ता ही गया।

संस्था के आरम्भ काल से लेकर ३१ मार्च १६५७ तक भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों तथा नैपाल में ४०० स्थानों पर कैम्प बड़ी सफलता पूर्वक हो चुके हैं। इन कैम्पों में तथा संघ के स्थायी अस्पताल दिल्ली में १,१०,८४८ औप्रेशन हो चुके हैं और १३६२६८६ रोगियों का दवा द्वारा मुफ्त इलाज किया। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि सफल औप्रेशनों का परिणाम ६८% प्रतिशत से भी अधिक रहा है।

सेठ नरसिंहदास जी बांगड़ द्वारा श्री ए० डी० पण्डित चीफ कमिश्नर दिल्ली का स्वागत बांगड़ चक्षु चिकित्सालय के उद्घाटनोत्सव पर

बांगड़ चक्षु चिकित्सालय के उद्घाटनोत्सव पर

सेठ नरसिंहदास जी बांगड़ द्वारा श्री ए० डी० पण्डित चीफ कमिश्नर दिल्ली का स्वागत

वांगड़ चक्षु चिकित्सालय के उद्घाटन अवसर पर

संस्था के अवैतनिक मन्त्री रा० ब० गयाप्रसाद जी मिशन का कार्य विवरण पढ़ते हुये

चक्षुदान-यज्ञ (कैम्प)

सन्त परमानन्द नेत्र सुधारक संघ स्थानीय चिकित्सालय के अतिरिक्त अन्य प्रान्तों, प्रदेशों एवं स्थानों पर कैम्प लगाकर चक्षुदान यज्ञों के आयोजनों द्वारा नेत्र रोगियों की सेवा कर रहा है। इस कार्य में संघ को आशातीत सफलता मिल रही है। इस संस्था के कुशल कार्य कर्ताओं तथा विशेषज्ञों ने अनथक परिश्रम और कष्ट उठा कर ग़रीब जनता की सेवा करने का जो कार्य किया है वह जनता से छिपा नहीं है।

चक्षुदान यज्ञ विशेष रूप से निर्धन व्यक्तियों के लिये लगाये जाते हैं। जिसमें रोगियों से किसी प्रकार की कोई फ़ीस नहीं ली जाती। इस योजना के अनुसार स्थानीय कोई धनी मानी सज्जन या वहां की सरकार अथवा कोई सेवा कार्य करने वाली सार्वजनिक संस्था अपने यहां नेत्र चिकित्सा कार्य करने के लिये संघ को आमन्त्रित करते हैं। वे ही सज्जन समस्त रोगियों, अथवा निर्धन असमर्थ रोगियों के लिये दूध, भोजन, ठहरने के लिये मकान, रोशनी, सफ़ाई आदि का प्रबन्ध करते हैं।

जब संघ को आमन्त्रित किया जाता है तो संघ के कार्य-कर्ता या प्रतिनिधि उस स्थान पर पहुंच जाते हैं और कैम्प आयोजन करने वाले सज्जन से मिलकर इश्तिहार, पोस्टर, लाऊड-स्पीकर, सिनेमा सलाइड, डुगडुगी, अखबार इत्यादि प्रचार के साधनों से कैम्प का समाचार दूर दूर तक चारों तरफ़ पहुंचाते हैं। ताकि गांवों में रहने वाली असहाय जनता को मालूम हो सके और अधिक से अधिक संख्या में आकर लाभ उठा सकें।

नेत्र रोग से पीड़ित रोगी नियत समय पर कैम्प में आ जाते हैं, और निर्धारित समय पर संस्था के नेत्र विशेषज्ञ व सहायक पहुंच कर पहिले नेत्र रोगियों की परीक्षा करते हैं। जिन रोगियों की स्थिति औप्रेशन के योग्य होती है उनके औप्रेशन कर दिये जाते हैं। जो नेत्र बिना औप्रेशन के ठीक हो सकते हैं उनको दो मास के लिये औषधि दे दी जाती है। मोतियाबिन्द के रोगियों को बिना चश्मे के ठीक नहीं दिखाई

देता उनकी सुविधा के लिये संस्था थोड़े दामों में रोगियों को चश्मा देती है। जो निर्धन रोगी चश्मे नहीं खरीद सकते, उन्हें चश्मे मुफ्त भी दिये जाते हैं।

उपयोगिता

संघ की ओर से तारीख ३१ मार्च सन् १९५७ तक ४०० चक्षुदान यज्ञ भिन्न-भिन्न स्थानों में और नैपाल आदि प्रदेशों में हो चुके हैं। जिन में ६७,१९६ आपरेशन हुये और संघ के स्थायी अस्पताल देहली में २०,६५२ आपरेशन हुये हैं। अर्थात् कुल १,१७,८४८ आपरेशन संघ के योग्य सर्जनों ने किये हैं। इन आपरेशन की उपयोगिता इसी से आंकी जा सकती है कि सफल आपरेशनों की औसत संख्या ९८ प्रतिशत से अधिक रही है। ३१ मार्च सन् १९५६ तक के कैम्पों का ब्यौरा गत रिपोर्ट में दिया जा चुका है। उसके बाद का पूरा हाल इस रिपोर्ट के साथ छपा है।

मुख्य अस्पताल

संघ का मुख्य अस्पताल १८ अलीपुर मार्ग दिल्ली में है जिसमें ५२ पलङ्ग हैं जो मकान के दो बड़े हालों में महिलाओं के लिये, दो बड़े हालों में पुरुषों के लिये, एक कमरे में बच्चों के लिये है इसके अतिरिक्त दो बड़े बरामदों में भी रोगी रखे जाते हैं।

इन्डोर वार्ड के साथ ही आपरेशन रूम, स्टरलाइजर रूम आदि हैं जिसमें आधुनिक काल के औजार हैं।

शीत काल में जब सामान्यतः रोगियों की संख्या बढ़ती है तब उनके लिये यथोचित परिणाम में डेरे, तम्बू लगाकर ठहरने का समुचित प्रबन्ध संघ की ओर से किया जाता है। जिसमें रोगियों की संख्या १६२ तक हो जाती है।

मुख्य अस्पताल में जहां इन्डोर विभाग है वहां आउटडोर विभाग भी है जो मकान के एक हिस्से में है उसमें से एक कमरे में डाक्टर रोगियों को देखते हैं, दूसरे में रोगियों की चिकित्सा की जाती है,

तीसरे में चश्मा जांच
जिसको चार भागों में
लैम्प (Slit lamp)
वैंगेपन वालों की व्याया
noptophore) चौथे
मशीनें हैं।

मकान के एक कोने
लिये, नियमित रूप से
लगाकर खून, थूक,
दिया है।

१८, अलीपुर मार्ग
करौलबाग तथा उसके
रख दिया गया है, जिस
स्थान है।

वर्ष के भीतर
विभाग में रहे हैं। और
हुआ परन्तु नेत्र रोग की
अनिवार्य हुआ।

नोट—इनके अतिरि
बिहार में भी है। एक
और दूसरी कारपोरेशन

स्कूल रोड, करौलबाग
विभाग खुला हुआ है
न्सरी में भी दो विभाग

(क) नेत्र चिकित्सा—
तक हो गई। सभी रोगि

तीसरे में चश्मा जांच किया जाता है, चौथे कमरे में डार्करूम है जिसको चार भागों में विभक्त किया गया है उसके एक हिस्से में स्लिट लैम्प (Slit lamp) दूसरे में पैरीमिटर (Peri meter) तीसरे में वैंगेपन वालों की व्यायाम द्वारा आंखें ठीक करने वाली मशीन (Synoptophore) चौथे में आंख जांच करने वाली आधुनिक काल की मशीनें हैं।

मकान के एक कोने वाले कमरे में संस्था ने मरीजों की सुविधा के लिये, नियमित रूप से एक विलायती माइक्रास्कोप (Microscope) लगाकर खून, थूक, और मल-मूत्र के निरीक्षण का प्रबन्ध कर दिया है।

१८, अलीपुर मार्ग मुख्य अस्पताल के अतिरिक्त १८/५३ स्कूल रोड करौलबाग तथा उसके पास अन्य एक और मकान में इन्डोर वार्ड रख दिया गया है, जिसमें एक साथ बीस रोगियों के ठहरने का स्थान है।

वर्ष के भीतर लगभग १००० आपरेशन के रोगी इण्डोर विभाग में रहे हैं। और दूसरे वे रोगी जिनका आपरेशन तो नहीं हुआ परन्तु नेत्र रोग की स्थिति के अनुसार उन्हें अस्पताल में रहना अनिवार्य हुआ।

नोट—इनके अतिरिक्त संघ की ओर से दो स्थायी डिस्पैन्सरियां बिहार में भी हैं। एक झाऊगंज पटनासिटी में ११ अगस्त १९५१ से और दूसरी कारपोरेशन बिल्डिंग में १८-१०-५२ से काम कर रही है।

आऊटडोर विभाग

स्कूल रोड, करौलबाग, देहली में संघ की ओर से आऊटडोर विभाग खुला हुआ है यह संघ की स्थायी डिस्पैन्सरी है। इस डिस्पैन्सरी में भी दो विभाग हैं:—

(क) नेत्र चिकित्सा—प्रतिदिन की रोगियों की संख्या इस वर्ष ४२१ तक हो गई। सभी रोगियों की चिकित्सा मुफ्त की जाती है।

(ख) जनरल रोगी—नेत्रों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के रोगियों के लिये यह विभाग सात वर्ष से खुला हुआ है। इस वर्ष इस विभाग में प्रतिदिन की रोगियों की संख्या २२५ तक हो गई है।

संस्था ने अपनी जमुना बाजार वाली जमीन पर एक डिस्पैन्सरी आरम्भ करदी है जिसमें आंख, नाक, कान तथा अन्य रोगों का इलाज भी किया जाता है।

सचल नेत्र अस्पताल का कार्य विवरण

आंख दुखने के बाद यदि समय पर इलाज नहीं किया जाता तो आंख में अलसर होकर फूला पड़ जाता है, और सदैव के लिये आदमी आंख से अन्धा हो जाता है इसी हेतु संस्था ने सचल नेत्र अस्पतालों का आयोजन किया है।

सामान्यतः सभी देहातों के निवासी खेती बाड़ी का कार्य धूप-ताप में देर सवेरे तक करते रहने के स्वभावी होते हैं जो अशिक्षा और ज्ञान रहित होने से नेत्रों की उतनी सावधानी नहीं रख सकते जितनी नेत्रों के लिये रखना आवश्यक है। वैसाख, ज्येष्ठ की कड़कती धूप और लू में सारी दोपहरी खलियानों में कार्य करने से, भूसा, धूल और अन्य कूड़ा-कचरा उनकी आंखों में दिन भर भरता रहता है, जिसके कारण वे नेत्र रोगी बन जाते हैं। अपनी ग़रीबी अथवा लापरवाही से चिकित्सा कराने के लिये वे शहर के अस्पतालों में भी नहीं जा पाते। ऐसे रोगियों की चिकित्सा करने की उदार भावना से संघ अपना 'सचल नेत्र अस्पताल' ग्राम-ग्राम में भेजता है और ग्रामीण जनों को लाभ पहुंचाने के लिये प्रयत्नशील रहता है।

संस्था ने समाज कल्याण बोर्ड बिहार, विन्ध्य-प्रदेश, राजस्थान, देहली तथा स्थानीय धनी मानी सज्जनों की सहायता से सचल नेत्र अस्पतालों का आयोजन किया है जो ग्राम-ग्राम में जाकर असहाय गरीब आंख के रोगियों की आंखें देखकर उन्हें एक या डेढ़ महीने तक के लिये दवा की शीशियां ड्रापर आदि देती है। उसका विवरण अगले पृष्ठ पर दिया गया है।

चीफ कमिश्नर श्री. ए. डी. पण्डित जी तथा डा० युद्धवीरसिंह जी आप्रेशन थियेटर में

चीफ कमिश्नर श्री. ए. डी. पण्डित जी तथा डा० युद्धवीरसिंह जी आप्रेशन थियेटर में

मुंगेर कैम्प में रोगियों को छुट्टी देते समय श्री ए० डी० एम० मुंगेर तथा कैम्प के कार्यकर्ता

१ अप्रैल १९

प्रान्त	गांव
देहली	७२
बिहार	२३५
विन्ध्यप्रदेश	२४३
राजस्थान	२४१
योग	७६१

नेत्र रोग

नेत्र रोग निवारणार्थ
आदि के रूप में साहित्य
वितरण किया जाता है।
नेत्र रोगों से बचने तथा
जनता को प्रेरणा देने का

नेत्र

हमें नेत्रहीनों को चि
ही उनकी सहायता करना
के दुर्भाग्य से निकल कर
नेत्र सुधार मेले (चक्षुदान
चाहिये।

यथासम्भव ग्रामों में
लोगों को औषधियां दिला

संघ के स्थायी अस्पत
चिकित्सा कराइये।

१ अप्रैल १९५६ से ३१ मार्च ५७ तक

प्रान्त	गांव	रोगी	दवा की शीशियां रोगियों को बांटी गई
देहली	७२	११,२९२	११,८१३
बिहार	२३५	१५,००५	१४,५९०
बिन्ध्यप्रदेश	२४३	३०,८९७	२७,२७२
राजस्थान	२४१	१४,७९९	१४,६५०
योग	७९१	७१,९९३	६८,३२५

नेत्र रोग निवारक प्रचार कार्य

नेत्र रोग निवारणार्थ—संघ की ओर से हैन्डबिल, पैम्फलेट, पुस्तक आदि के रूप में साहित्य तैयार किया गया है। जिन्हें जनसाधारण में वितरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त मैजिक लालटेन के द्वारा भी नेत्र रोगों से बचने तथा उनकी शीघ्रातिशीघ्र चिकित्सा कराने के लिये जनता को प्रेरणा देने का कार्य संघ करता ही रहता है।

नेत्रहीनों की सहायता

हमें नेत्रहीनों को चिकित्सा कराने का प्रोत्साहन तथा प्रेरणा देना ही उनकी सहायता करना नहीं समझ लेना चाहिये किन्तु उनकी अन्धता के दुर्भाग्य से निकल कर नेत्र-दृष्टि प्रदान करने के लिए अपने क्षेत्रों में नेत्र सुधार मेले (चक्षुदान यज्ञ) करने कराने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिये।

यथासम्भव ग्रामों में चलते फिरते अस्पतालों को बुला कर गरीब लोगों को औषधियां दिलाने का ध्यान रखना चाहिये।

संघ के स्थायी अस्पतालों में रोगियों को भेज कर उन की उत्तम चिकित्सा कराइये।

अन्धता के निवारणार्थ साहित्य वितरण करके नेत्र रक्षा के ज्ञान की वृद्धि कीजिये।

अन्धता निवारण पर उत्तम विशेषज्ञों के व्याख्यान कराने का उद्योग कीजिये।

नेत्र सम्बन्धी अनुभूत औषधियों को रोगियों में वितरण कीजिये।

असाध्य नेत्रहीन व्यक्तियों को उद्योग धन्धों में लगाइये।

अनाथ, असहाय, घरविहीन अन्धों को अपनाइये और उनका जीवन-सुखी बनाने का यत्न कीजिये।

आभार प्रदर्शन

संस्था को सन् १९५६-५७ में जो सहायता (Grant-in-aid) सरकार आदि से मिली है उससे गरीब जनता को बहुत लाभ पहुंचाया गया, संस्था उनको बहुत बहुत धन्यवाद देती है, और साथ ही आशा करती है कि भविष्य में भी इस विषय में विशेष ध्यान देने की कृपा करेंगे, ताकि मिशन जनता को अधिक से अधिक लाभ पहुँचा सके।

२०,०००	सेन्ट्रल गवर्मेन्ट।
१७,०००	समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली स्टेट।
१२,०००	चीफ कमिश्नर, दिल्ली।
७,०००	गान्धी स्मारक निधि।
५,०००	समाज कल्याण बोर्ड, (बिहार)
५,०००	" " " (विन्ध प्रदेश)
५,०००	श्रीमती यशवति देवी धर्मपत्नी प्रोफेसर मनोहर लाल खड़ग वासला।
३,०००	दिल्ली म्युनिस्पल कमेटी, दिल्ली।
३,०००	समाज कल्याण बोर्ड, (राजस्थान)
२,८००	अखिल भारतीय आर्य हिन्दू धर्म सेवा संघ, (दिल्ली)
२,०००	महाराजा रीवां, (विन्ध प्रदेश)
२,०००	बिहार सरकार।
२,०३३	इन्डियन रेड क्रौस सोसायटी द्वारा औषधि।
१,०००	नोटीफाईड एरिया कमेटी (दिल्ली)

चलता फिरता अस्पताल विन्ध्य-प्रदेश

चलता फिरता अस्पताल विन्ध्य-प्रदेश

बिहार में मिशन का चलता फिरता अस्पताल

मिशन का देहली में चलता फिरता अस्पताल

संस्था उन धनी मानी
आभारी है जो प्रतिवर्ष ग
पर चक्षुदान यज्ञ (कैम्पों)
द्वारा उपचार करवाते हैं
द्वारा जनता को लाभ पह
आशा है।

निम्नांकित डाक्टर स
अपना बहुमूल्य समय
सहृदयता से सेवा की है

१. डाक्टर नन्दलाल
D.P.H. (Lon
D.O.M.S. (

२. डा० एस. एम. शर्क
Specialist, Profe

३. डा० के० एन० टन्ड
(London) C.C

४. डा० आर लमया M
(London), Zie

५. डा० रामकृष्ण जी ह
L. O. (Madra
in the

संस्था उन धनी मानी सेठों, सज्जनों व संस्थाओं की भी अत्यन्त आभारी है जो प्रतिवर्ष ग़रीब जनता को एकत्रित करके भिन्न भिन्न स्थानों पर चक्षुदान यज्ञ (कैम्पों) का आयोजन करके हमारे डाक्टरों व कम्पौण्डरों द्वारा उपचार करवाते हैं। और भविष्य में भी इसी प्रकार आयोजनों द्वारा जनता को लाभ पहुंचाने में हमें पूर्ण सहयोग देते रहेंगे ऐसी पूर्ण आशा है।

निम्नांकित डाक्टर साहिबानों के भी हम अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय अवेतनिक रूप में देकर जनता जनार्दन की सहृदयता से सेवा की है और करते आ रहे हैं।

१. डाक्टर नन्दलाल जी वर्मा M.B.B.S.,
D.P.H. (London) D.T.M. & H. (Camb),
D.O.M.S. (London), Retd. Civil Surgeon U.P.

२. डा० एस. एम. शकील M.B.B.S. D.O. (Oxon) Eye-Specialist, Professor, Patna Medical College, Patna.

३. डा० के० एन० टन्डन M.B.B.S. D.O.M.S. (London) C.C. (Mooifeld)

४. डा० आर लमया M.B.B.S. D.O.M.S. (London), Zieug (Vienna)

५. डा० रामकृष्ण जी हाण्डा M.B.B.S.,
L. O. (Madras), Eye Specialist, Formerly in the Sir Ganga Ram Hospital Lohore.

इस वर्ष में निम्नलिखित महानुभाव मिशन के अस्पताल में पधारे और कार्य देखकर सन्तोष व्यक्त किया, हम आप सभी सज्जनों के कृतज्ञ हैं।

श्री सी.सी. विश्वास विधि मन्त्री भारत सरकार।

श्री ए.डी. पण्डित चीफ कमिश्नर दिल्ली।

श्री कर्नल लक्ष्मनन डायरेक्टर जनरल हैल्थ सरविसेज।

श्री जी. मुखर्जी चेयरमैन इम्प्रूमेन्ट टस्ट दिल्ली।

श्री जी० एल० मित्तल P.C.S. सेक्रेटरी इम्प्रूमेन्ट ट्रस्ट दिल्ली।

श्री हरिप्रकाश P.C.S. मजिस्ट्रेट फर्स्टक्लास दिल्ली।

देहली तथा देहली के बाहर जिन समाचार पत्रों ने सघ के समाचार तथा कार्य विवरण को अपने पत्रों में समय समय पर प्रकाशित कर संघ को प्रोत्साहित किया है, संघ उन सब का आभार मानता है और आशा करता है कि भविष्य में भी उनका सहयोग तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता रहेगा।

संघ सरकारी रेडियो विभाग का भी आभारी है जिसने समय समय पर संघ के चक्षुदान यज्ञों की सूचना जन साधारण को दी है।

संस्था अपने सभी कर्मचारियों का भी आभार प्रदर्शन करती है कि इतनी कम वेतन मिलने पर भी संस्था को पूर्ण रूप से सहयोग देकर अपने कार्य कुशलता का परिचय दिया जिसके द्वारा आज संस्था इतना कार्य कर सकी। आशा है भविष्य में भी कार्य कर्ता पूर्ण सहयोग देते रहेंगे।

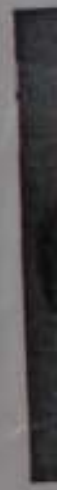

—०—

भेंगापन वाले एक लड़के का चित्र

आप्रेशन के पहिले

आप्रेशन के बाद

कुचामन (राजस्थान) कैम्प में रोगियों को छुट्टी देते समय का एक दृश्य

अनुरोध

संस्था का १८ अलीपुर मार्ग देहली में जो अस्पताल है उसमें इन्डोर विभाग में केवल ५२ रोगियों के लिए ही स्थान है जो कि रोगियों को देखते हुए पर्याप्त नहीं है। इसी मकान में आऊटडोर विभाग चश्मा टैस्टिङ्ग डार्क रूम इत्यादि स्थान हैं, इसमें यदि आऊटडोर विभाग न रखा जाय तो कुछ पर्याप्त स्थान हो सकता है। इस हेतु संस्था को आऊटडोर मकान, व हाउस सर्जन, के लिए मकान बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। जिसमें १,००,००० (एक लाख) रुपये के क़रीब व्यय होगा।

इसके अलावा संस्था को देहली इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्ट द्वारा जमुना बाजार देहली में लगभग ३३०० वर्गगज जमीन मिली है जिसमें भवन निर्माण कार्य शुरू हो चुका है और आठ कमरे आऊटडोर विभाग के तैयार हो चुके हैं उसमें इन्डोर विभाग भवन बनाना तथा फर्नीचर औज़ार इत्यादि के हेतु २,००,०००(दो लाख) रुपये की आवश्यकता है।

अतएव सन्त परमानन्द नेत्र सुधारक संघ देश के उदार-हृदय, धनी मानी दानी महानुभावों से अनुरोध करता है कि वे देश से अन्धता रोग का विनाश करने, नेत्रहीनों को दृष्टि-दान देने, तथा नेत्र चिकित्सा भवन निर्माण के लिये अपने मान सम्मान के उपयुक्त द्रव्य दान देकर अक्षय पुण्य एवं यश के भागी बनें।

संघ की ओर से अधिकारियों का डेपुटेशन भी धन संग्रह के निमित्त देहली तथा अन्य नगरों में दानशील, धर्मात्माओं की सेवा में पहुंचेगा हमें पूर्ण आशा है कि देश के सभी उदार हृदय सज्जन यथाशक्ति अपनी न्योछावर चैक, मनीआर्डर आदि द्वारा भेजने की विशेष कृपा करेंगे। द्रव्य पहुंचने पर तत्काल ही दानी महानुभावों को कार्यालय से रसीद भेजी जावेंगी और संघ की ओर से उनका धन्यवाद प्रकाशित किया जावेगा।

हमारी अभिलाषा है कि यह पुनीत कार्य इस चालू वर्ष में सम्पूर्ण हो जाय और संघ अधिक से अधिक रोगियों के ठहराने एवं चिकित्सा करने का प्रबन्ध कर सके।

संघ का तीन वर्षों का कार्य-विवरण

	१९५४-५५	१९५५-५६	१९५६-५७
१—१८ अलीपुर मार्ग स्थित अस्पताल			
नये मरीज़	—	—	५,२४९
नये पुराने मरीज़	—	—	१०,९८७
आप्रेशन	—	—	२८१
इंजेक्शन	—	—	७१२
२—(क) करौल बाग नेत्र अस्पताल			
नये मरीज़	३३,८६९	३३,४७८	२५,६००
नये पुराने मरीज़	९९,८२३	९०,५८९	७४,७७३
आप्रेशन	१,५५२	१,३२८	६५५
निःशुल्क-भोजन	५५४	८७५	१४५
किराया नहीं लिया गया	३५८	६२	४८
(ख) करौल बाग जनरल शाखा			
नये मरीज़	१९,७८५	१८,६०१	१५,८६५
नये पुराने मरीज़	४९,५८१	४८,२९६	४७,११०
३—जमना बाज़ार डिस्पैंसरी			
नये मरीज़	१,८५९	६,१९८	८,१३१
नये पुराने मरीज़	५,०५९	१९,५७५	२७,६७७
४—(क) पटना सिटी नं० १ (फाऊगंज)			
नये मरीज़	४,९१९	५,४१३	४,९२५
नये पुराने मरीज़	२८,६१४	३४,८४२	३३,०९६

(ख) पटना सिटी नं० २ (कार्पोरेशन बिल्डिंग)			
नये मरीज़	६,६३२	७,८४२	६,४८०
नये पुराने मरीज़	३६,४३०	४७,४४२	३६,१५६
५—कैम्पों द्वारा कार्य			
कुल आप्रेशन	२३६१	४,६५४	४,५१०
दवाओं से इलाज	६०६५	१३,१७६	१२,८४६
६—सचल अस्पताल दिल्ली			
दवा की शीशियां बांटी गईं	१०,४०२	३,६६६	११,८१३
७—सचल अस्पताल, मध्यप्रदेश			
दवा की शीशियां बांटी गईं	—	२३११८	२७,२७२
८—सचल अस्पताल, राज स्थान			
दवा की शीशियां बांटी गईं	—	७,६४०	१४,६५०
९—सचल अस्पताल, बिहार			
दवा की शीशियां बांटी गईं	—	—	१४,५६०
कुल रोगियों का इलाज	२३६००१	२७५२७६	३,१४,१७३

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन, दिल्ली।

नं०	स्थान	तारीख	कुल संख्या	दवाइयां	औप्रेसन	किसने कैम्प कराया
३८१	कुचामन (राजस्थान)	१३-४-५६	५४०	२५५	१००	सेवा समिति कुचामन।
३८२	पिलानी ,,	५-१०-५६	१०००	४५०	१७१	श्री बृजमोहन जी लोयलका।
३८३	दांतिया ,,	२०-१०-५६	१०१८	८६०	२७३	,, चन्द्रभान सूरजभान जैन।
३८४	खेतड़ी ,,	४-११-५६	६००	३२६	१५७	,, बृजमोहनजी लोयलका पिलानी वाले।
३८५	मलसेशर ,,	१-१२-५६	३५०	१५२	४८	,, ,, ,, ,, ,,
३८६	मोकामा (बिहार)	१४-१२-५६	१०६६	४६७	२४१	डा० देवेन्द्रनाथ जी पाठक तथा स्थानीय जनता।
३८७	कलकत्ता	२२-१२-५६	८२३	५६४	१२४	बिरला जूट मिल बिरलापुर।
३८८	गुडा गौड़जीका(राजस्थान)	३०-१२-५६	१०००	५६७	१६७	श्री बृजमोहनजी लोयलका पिलानी वाले।
३८९	बक्सर (बिहार)	३-१-५७	१८६३	८८६	३७२	श्री तारकेश्वर प्रसाद जी सर्राफ तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९०	मुंगेर ,,	६-१-५७	२४००	११११	५७४	श्री कविराज रामानन्द जी शास्त्री तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९१	सिवान ,,	६-१-५७	१३०७	६०६	२०४	ग्रेन मरचेन्ट एसोसियेसन।
३९२	अमरपाटन (वि० प्र०)	१८-१-५७	१४२५	१००८	२७७	श्री कपूरचन्द जी जैन
३९३	फारबिषगंज (बिहार)	२२-१-५७	१५३३	११२७	४२६	श्री सीताराम जी अग्रवाल तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९४	महाराजपुर (वि० प्र०)	३१-१-५७	१०००	३३६	१४२	कोपराइटिव सोसायटी
३९५	पटना सिटी (बिहार)	२-२-५७	१७१३	७१३	२८१	सेठ गंगाधर नथमल तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
		२२-२-५७	१२००	६०६	२६३	कविराज रामानन्द जी शास्त्री तथा

३८६	बक्सर (बिहार)					
३९०	मुंगेर ,,	६-१-४७	२४००	११११	४७४	श्री कविराज रामानन्द जी शास्त्री तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९१	सिवान ,,	६-१-४७	१३०७	६०६	२०४	प्रेन मरचेन्ट एसोसियेसन।
३९२	अमरपाटन (वि० प्र०)	१८-१-४७	१४२५	१००८	२७७	श्री कपूरचन्द जी जैन
३९३	फारबिषगंज (बिहार)	२२-१-४७	१५३३	११२७	४२६	श्री सीताराम जी अग्रवाल तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९४	महाराजपुर (वि० प्र०)	३१-१-४७	१०००	३३६	१४२	कोपराइटिव सोसायटी
३९५	पटना सिटी (बिहार)	२-२-४७	१७१३	७१३	२८१	सेठ गंगाधर नथमल तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९६	वेगूसराय ,,	१२-२-४७	१२००	६०६	२६३	कविराज रामानन्द जी शास्त्री तथा चक्षुदान यज्ञ समिति।
३९७	सफीदों (ई० पं०)	३-३-४७	३५०	२००	६४	सेठ रामगोपाल, सेठ अनन्तराम, सेठ अभयराम जी।
३९८	नसीराबाद (राजस्थान)	४-३-४७	७००	४५०	६८	अरबन कोपराइटिव बैंक
३९९	एटमा (वि० प्र०)	२३-३-४७	७००	३६१	१५२	ठा० लाल गंगासिंह जी
४००	दिल्ली	१६-३-४७	२०५०	१८२०	३७३	सेठ रामकुमार जी बांगड़ डीडवाना वाले
	योग		८,६७,६१६	२,७१,२६१	६७,०६६	

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन १८ अलिपुर दिल्ली।

आय का लेखा (ता० १ अप्रैल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक)

	बिहार	राजस्थान	विन्ध्य प्रदेश	हेड आफिस दिल्ली	योग
दान द्वारा आय	११४२४-१२-०	४८१७-०-०	१३४५-३-०	१६७६२-६-६	३४३४८-५-६
सरकार आदि से सहायता	७०००-०-०	३०००-०-०	५०००-०-०	१८०००-०-०	३३०००-०-०
प्राइवेट फीस	....	....	....	२५०१-०-०	२५०१-०-०
नेत्र परीक्षा	....	....	....	२४४८-०-०	२४४८-०-०
किराये से आय	....	....	....	६५७३-०-०	६५७३-०-०
ब्याज की आय	....	....	....	१८९६-१०-६	१८९६-१०-६
औषधियों की आय तथा चश्मों का विक्रय	३०२८-०-०	१६९१-०-०	३६१-०-०	१६०२७--०-३	२११०७--०-३
विविध आय	....	....	....	७७५--५-०	७७५--५-०
योग	२१,५५२-१२-०	९,५०८-०-०	६,७०५-३-०	६५,८८३--५-३	१,०२,६५९--५-३

चान्दनी चौक, दिल्ली

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट

(गो)

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली।

व्यय का लेखा (ता० १ अप्रैल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक)

	बिहार	राजस्थान	विन्ध्य प्रदेश	हेड आफिस	योग

योग	२१,४४२-१२-०	६,५०८-०-०	३,७०५-३-०	

चान्दनी चौक, दिल्ली

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ़ मिशन १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली।

व्यय का लेखा (ता० १ अप्रैल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक)

	बिहार	राजस्थान	बिन्ध्य प्रदेश	हैड आफिस	योग
स्टाफ़ का वेतन तथा प्राइवेट फीस	४६२७-३-०	२२५३-०-०	१६७५-३-०	२६६०८-१०-६	३८७६४--०-६
किराया व टैक्स	....	....	...	४६०१-१४-०	४६०१-१४-०
छपाई व स्टेशनरी	....	....	...	१०४०-१२-३	१०४०-१२-३
डाक खर्च	....	....	...	४१३--४-०	४१३--४-०
मार्ग व्यय	....	....	....	८२०--२-०	८२०--२-०
औषधियां, चश्में शीशियां, भोजन	११७८८-२-६	५४६३-१३-०	८०६३-३-०	१२८०६-१०-६	३७२८५-१३-३
कैम्पों का व्यय	....	...	...	११०८--०-६	११०८--०-६
गाड़ी का व्यय	....	...	...	११५८-१०-६	११५८-१०-६
घिसाई की रकम	....	...	...	५४६५--४-३	५४६५--४-३
टेलीफोन खर्च	....	...	...	४३७-१५-०	४३७-१५-०

	बिहार	राजस्थान	विन्ध्य प्रदेश	हेड आफिस	योग
औडिट फीस	....	...	...	२५०—०-०	२५०—०-०
टाटा शेयर में घाटा	....	...	...	३२७८-१०-०	३२७८-१०-०
औजार तथा सामान की मरम्मत		...	...	१४६०—८-३	१४६०—८-३
बट्टा खाता	....	...	...	१०८७-१३-०	१०८७-१३-०
जनरलचार्जेज विधि व्यय	३६७०-२-३	३०३६-३-०	१६५३-१५-६	१२६७—०-२	६६३०—५-२
अलीपुर उद्घाटन	....	...	...	६८६—४-३	६८६—४-३
योग	२०,३८५-७-६	६,८८६-०-०	११,७२२-५-६	६६,१२७—७-८	१,०८,१२१—५-२

चान्दनी चौक, दिल्ली।

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैट

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली।

तलपट (बैलेन्स शीट) ता० १ अप्रेल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक

चान्दनी चौक, दिल्ली।

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैंट

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली।

तलपट (बैलेन्स शीट) ता० १ अप्रेल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक

पूंजी व देन Liabilities				
अधिकृत पूंजी (जनरल फण्ड)	...	...	...	७७२५३--६-०
विविध करज	...	...	...	११००८-११-३
भवन फण्ड	...	...	...	३०२,९३६--०-६
			योग	३,९१,१९८--१-९

चान्दनी चौक, दिल्ली।

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली।

तलपट (Assets) सम्पति व लेन (ता० १ अप्रेल १९५६ से ३१ मार्च १९५७ तक)

फरनीचर आदि	....	....	....	१५३९८-१३-०
औजार	....	....	....	२५,६५९--२-६
अस्पताल की विविध वस्तुयें	....	....	....	१,३८०--३-०
स्टोक और स्टोर	....	....	....	१०,१०९-११-६
जमानत	...	...	...	७५५--०-०
आय व्यय का हिसाब	...	...	...	३७०३९-१५-९
गाड़ियां	...	...	...	१९,८७०--९-०
नकद और बैंक में जमा	...	....	....	४१,०९८-१०-९
जायदाद	....	...	....	२,४०,८९६--१-३
			योग	३,९१,१९८--१-९

चान्दनी चौक, दिल्ली।

हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट

"शोक--प्रकाश"

विगत वर्षों में संस्था की कुछ अपूर्व निधियां खो गई। अभी माननीय श्री श्रीकृष्णदास जी जाजू (उपसभापति, इस संस्था के) की मृत्यु का दुःख कम भी न हो पाया था कि हमें अपने श्रद्धेय प्रधान मन्त्री श्री हरिकृष्ण जी अग्रवाल के परमधाम गमन का असहनीय दुःख सहना पड़ा।

माननीय अग्रवाल जी ने संस्था का संचालन भार अप्रैल सन् १९४६ ई० में अपने हाथों में उस समय लिया था जबकि संस्था के पास मरीजों के लिये किराये पर लिये हुये तम्बुओं तथा बांस की चारपाइयों के अतिरिक्त तीन छोटे से किराये पर लिये हुये मकान करौलबाग में थे। किसी भी राज्य से कोई आर्थिक सहायता संस्था को नहीं मिलती थी। ऐसी स्थिति में अग्रवालजी ने अपनी कुशाग्र बुद्धि तथा अथक परिश्रम द्वारा केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, विभिन्न समाज कल्याण बोर्डों, कैम्प करने वाले महानुभावों तथा श्री वांगड़ जी से संबन्ध स्थापित कर सहायता लेनी शुरू की।

संस्था की हित चिन्ता में अपने को ऐसा खपा दिया था कि आप अपने स्वास्थ्य की भी रक्षा न कर सके। निरन्तर स्वास्थ्य गिरता गया और दो जुलाई ५६ को आप परमधाम सिधार गये। ऐसे जन-सेवी प्रधान मन्त्री की मृत्यु से संस्था को गहरा धक्का लगा, संस्था ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और समस्त कुटुम्बी जनों को ईश्वर धैर्य और शक्ति दें।

योग ३,६१,१६८--१-
हस्ताक्षर डी० पी० खोसला
चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट
चान्दनी चौक, दिल्ली।

संस्था का नया चिकित्सालय

सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन को जो स्थान स्वर्गीय सेठ मगनीराम जी बांगड़ द्वारा प्राप्त हुआ है जिस स्थान का नाम श्री बांगड़ चक्षु चिकित्सालय रखा गया है उसका उद्घाटन २० मार्च सन् १९५७ को श्री ए० डी० पण्डित् आई० सी० एस० चीफ कमिश्नर दिल्ली ने अपने कर कमलों द्वारा किया, इस अवसर पर श्री नरसिंह दास जी बांगड़ पधारे थे। इस शुभ कार्य की अध्यक्षता डा० युद्धवीर सिंह जी भूतपूर्व स्वास्थ्य मन्त्री दिल्ली राज्य ने किया। शहर के बहुत प्रसिद्ध धनीमानी सज्जनों ने अपना अमूल्य समय देकर इस अवसर की शोभा बढ़ाई। संस्था के अवैतनीक मन्त्री रा० ब० गयाप्रसाद जी ने संस्था की संक्षिप्त रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई, श्री एस० के० मालू जी संस्था के उप प्रधान ने स्वागत भाषण के बाद चीफ कमिश्नर तथा डा० युद्धवीर सिंह जी को धन्यवाद दिया।

डा० युद्धवीरसिंह जी ने संस्था के कार्य की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि इस तरह काम करने वाली और संस्थाओं की भी बड़ी आवश्यकता है। श्री ए० डी० पण्डित चीफ कमिश्नर साहब ने बतलाया कि सरकार की पंच वर्षीय योजना के कारण बहुत सहायता तो न कर सकेगी, परन्तु उन्होंने देश के सभी धनीमानी सज्जनों से अपील की कि संस्था को अधिक से दान देकर सरकार का हाथ बटावें। इसी समय पर श्री बांगड़ जी की तरफ से चक्षुदान यज्ञ (कैम्प) किया गया था जिसमें सब रोगियों को दूध, खाना, चश्मा आदि सभी चीजों का निः शुल्क प्रबन्ध था, बिल्डिंग में पूरा स्थान न होने के कारण बाहर डेरे, तम्बू लगाकर रोगियों के स्थान का प्रबन्ध किया गया।

चीफ कमिश्नर साहब ने अस्पताल की बिल्डिंग डार्क रूम में लगे हुये आधुनिक काल की आंख जांच करने की सभी मशीनें, ऑप्रेशन हाल व ऑप्रेशन करते हुये रोगी तथा अस्पताल के रोगियों को देखकर सन्तोष व्यक्त किया।

इस अवसर पर संस्था के कर्मचारियों को १४ दिन का वेतन पुरुस्कार स्वरूप दिया गया।

मिशन के कार्य की प्रशंसा

इस विषय में कुछ प्रसिद्ध सज्जनों महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरू, श्री राजकुमारी अमृतकौर, हिज एक्सीलेन्सी एम० एस० अणे, हिज एक्सीलेन्सी डा० पट्टाभी सीतारमय्या, हिज एक्सीलेन्सी सरदार सुरजीतसिंह मजीठिया, हिज हाईनेस ३ सरकार महाराजा मोहन शमशेर जंगबहादुर, ऑनरेबल श्री जगजीवनराम, हिज एक्सीलेन्सी गुरुमुख निहालसिंह आदि की सम्मतियां गत वर्षों की रिपोर्ट में अङ्कित हैं।

आनरेबल श्री चारुचन्द्र विश्वास विधि मंत्री भारत सरकार

मुझे सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन के १८ अलिपुर मार्ग दिल्ली स्थित चक्षु-चिकित्सालय के निरीक्षण का अवसर मिला था। जिससे देख मैं बहुत प्रभावित हुआ था। अवैतनिक मन्त्री रा० ब० गया प्रसाद तथा आपने सहकारी बी० डी० गुप्ता एल० एम० पी० नेत्र विशेषज्ञ डा० एस० बी० चटर्जी ने मुझे पूर्ण अस्पताल दिखाया। संस्था एक आंख के अस्पताल की सभी विशेष आवश्यकताओं से सुसज्जित है। चिकित्सा के लिये कोई शुल्क नहीं, अतः एवं निर्विवाद रूप से बड़ी संख्या में गरीब रोगियों द्वारा इसका लाभ उठाया जाता है। जिसके लिये इस अस्पताल ने बहुत से समर्थ लोक हितैषियों का उदार-सहयोग प्राप्त किया है। इसका बहुत श्रेय इसके कार्यकर्ताओं को है जो संस्था की सेवा में कोई कसर नहीं रखते। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूं।

(चारुचन्द्र विश्वास)
विधि और अल्पसंख्यक विभाग के
मन्त्री-भारत सरकार

दि० ८-११-५६

श्री सी॰ के॰ लक्ष्मणन् डायरेक्टर जनरल हैल्थ सर्विसेज़

आज प्रातःकाल मैंने [illegible] परमानन्द ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन के १८ अलिपुर मा[illegible] [illegible]त्रीय अस्पताल का निरीक्षण किया। मिशन को प्राप्त इस नई बिल्डिङ्ग ने इसे रोगियों को अपेक्षा कृत अधिक चिकित्सालय सुविधायें देने में समर्थ करा दिया है। अस्पताल और बहिर्मार्ग बहुत साफ सुथरा रखा जाता है। रोगियों की देख-भाल अत्यन्त उत्साही कार्यकर्त्ताओं द्वारा होती है तथा चिकित्सा अत्यन्त उच्च कोटि की दी जाती है।

जब मैंने पहिली बार इस अस्पताल का निरीक्षण किया था, तब से इसका कार्य विशेष रूप से बढ़ गया और जमना बाजार में एक तीसरी शाखा खोली गई है, इसके अधिकारीगण बहुत उत्तम कार्य कर रहे हैं और मैं इसकी पूर्ण सफलता की कामना करता हूं।

(सी॰ के॰ लक्ष्मणन्)
डाइरेक्टर जनरल आफ हैल्थ सर्विसेज

दि॰ २६-१०-५६

रा॰ ब॰ गया प्रसाद
अवैतनिक मन्त्री
सन्त परमानन्द ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन

सत्य प्रिंटिंग प्रेस, २ शिवनगर करोल बाग देहली।